'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८४ | वाराणसी, गुरुवार, १६ जुलाई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

स्वागत-प्रवचन

थानामंडी (कश्मीर) २५-६-'५९

अपना सुख दूसरे के सुख से अलग न समझें

हम यहाँ आ रहे थे तो हमसे कहा गया कि 'यहाँ मुगलसराय है।' सुनते ही ४-५ सौ सालों का इतिहास हमारी आँखों के सामने खड़ा हो आया।

बादशाही की याद

पुरानी बात है, जब मुगल बादशाह सारे हिंदुस्तान पर हुकूमत चलाते थे। कुछ बादशाह बहुत अच्छे हुए, जिन्होंने लोगों को खुशहाल रखा। कुछ ऐसे भी हुए, जिनसे प्रजा तंग आ गयी। मशहूर नाम है 'अकबर' का, जिसके जमाने में सब खुशहाल थे और मशहूर नाम है 'औरंगजेब' का, जिसके जमाने में काफी कशमकश, लड़ाई, झगड़े-फसाद हुए। आखिर उनकी सल्तनत किसी न किसी तरह शाह आलम तक चली और फिर उनका नामोनिशान भी नहीं रहा। अब तो उनके वंशजों में से कुछ ऐसे भी होंगे, जो भीख माँगते फिरते होंगे तो किसी-को पता भी नहीं होगा। कश्मीर की दस हजार साल की तवारीख में कितनी ही रियासतें आयीं और गयीं। दुनिया में कितने ही बड़े-बड़े बादशाह आये और गये। उनके अपने-अपने जमाने में उनकी खूब शान-शौकत चलती थी। वे उनपर अपना रोब जमाते थे और आखिर चले जाते थे तो उनका नामोनिशान भी नहीं रहता था।

जनता भक्तों को जानती है, बादशाह को नहीं

गांधीजी के बाद जब हम मेवों को फिर से बसाने का काम कर रहे थे तो हमने देहली से ३० मील पर एक गाँव में मुसल-मानों के एक जलसे में तकरीर के दौरान में सहज ही अकबर बादशाह का जिक्र किया, जो मुगलों के सबसे बड़े और सबसे बेहतरीन बादशाह थे, जिनका नाम तवारीख पढ़नेवालों को मालूम है। लेकिन जब हमने अकबर का जिक्र किया तो सुनने-वालों के चेहरों पर ऐसी रोशनी नहीं देखी कि वे उसे पहचानते हों। इसलिए मैंने उन लोगों से पूछा कि 'क्या आपने अकबर बाद-शाह का नाम सुना है? जिन्होंने नाम सुना हो, वे हाथ उठायें।' एक भी हाथ नहीं उठा। जब मैंने पूछा कि 'क्या आपने अकबर लफ्ज भी नहीं सुना?' तो उन्होंने कहा—हाँ, लफ्ज जरूर सुना है और उसे हम रोज बोलते भी हैं 'अल्ला हो अकबर, अल्ला हो अक-बर'। यह है हिन्दुस्तान की तहजीब, जिसमें बादशाह की कोई कीमत नहीं, कोई परवाह नहीं। यहाँ कीमत है भगवान की, संतों की, नबियों की, वलियों की। बड़े-बड़े बादशाह आये और गये, लोग उन्हें जानते भी नहीं। सिर्फ तालिबिल्मों के दिमाग में उनकी जानकारी ठूँसी जाती है। यहाँके लोग 'लल्ला' को जानते हैं, जो कश्मीर में ६०० साल पहले हुई थी और बड़ी भक्त थी। लेकिन वे मुगल बादशाहों को भूल गये।

जिन्दगी में सबका एक ही रास्ता

हमसे कहा गया कि यहाँसे सीधा रास्ता श्रीनगर जाता है, जिससे मुगल बादशाह जाते थे। लेकिन जन्म से लेकर मौत तक एक सीधी सड़क बनी है और हम सब उसी रास्ते से जाने-वाले हैं। चाहे मुगल बादशाह हों, आप हों या हम, सब उसी रास्ते से जाते हैं। फिर मौते बाद दो रास्ते हो जाते हैं, एक जन्नत का और दूसरा जहन्नुम का। मगर इस जिन्दगी में हम सबका एक ही रास्ता है। हम भी बच्चे थे, जवान बने और फिर बूढ़े हुए। आप भी बच्चे थे, फिर जवान बने और फिर बूढ़े होंगे। फिर बुढ़ापे के बाद कजा आयेगी तो सबको जाना होगा। फिर पाँच मिनट की भी मुहलत नहीं मिलनेवाली है। जो लमहा तय है, उसी वक्त जाना पड़ेगा। एक बड़ा भारी रास्ता तय है, जिसपर हजारों, लाखों, करोड़ों, अरबों, अनगिनत आदमी जा रहे हैं और जायँगे। उन बादशाहों की सारी शान-शौकत, रौनक और जीनत कहाँ रही? वह मिट्टी में मिल गयी। लेकिन जब तक इस जिस्म में रहते हैं, साँस चलती है, तब तक कितना घमंड, कितना गरूर करते हैं। पर साँस खत्म होने पर हम सब मिट्टी में मिल जाते हैं। फिर कोई बादशाह मर गया हो या कोई मामूली आदमी, किसीकी कोई कीमत नहीं रहती। लेकिन बीच में हम झगड़ा-फसाद, दंगे, लड़ाई, जंग करते रहते हैं। झगड़ा एक ही चीज है, लेकिन उसके लिए कितने लफ्ज बने हैं! याने वह चीज हमारे आगे, पीछे, ऊपर, नीचे है। चारों

ओर से हम घिरे हुए हैं, क्योंकि उसके कई सबब होते हैं। नतीजा यह होता है कि अभी तक इन्सान सुकून-शांति नहीं पा सका है।

सुख पाने का राज

किसीसे भी पूछा जाय कि तुम किसलिए कोशिश कर रहे हो तो जवाब मिलेगा 'सुख हासिल करने के लिए।' अजीब बात है। इन्सान सुख हासिल करने की कोशिश करता है, लेकिन हासिल करता है दुःख! राह चलता है श्रीनगर की और पहुँचता है देहली! यह कैसे हो रहा है? इसमें कुछ तो अंधापन है ही। कहीं न कहीं गलती हो रही है। गलती यही है कि हम अपना सुख दूसरों से अलग समझते हैं और दूसरों के सुख-दुःख की परवाह नहीं करते। हम मानते हैं कि मेरा सुख और आपका सुख अलग है तो मेरे सुख को आप तोड़ते हैं और आपके सुख को मैं तोड़ता हूँ। आपके दो हाथ और मेरे दो हाथ मिल जायँ तो चार बनेंगे। लेकिन हम एक-दूसरे को गिराने की कोशिश करते हैं तो चार के बजाय 'साइफर' बन जाता है। आपके पास ३० सेर और मेरे पास २० सेर ताकत हो तो हम दोनों की टक्कर होने से सिर्फ दस सेर ताकत बच जाती है।

दुःख के जिम्मेदार हम ही

भगवान ने हमें ताकत कम नहीं दी है। उसने किस्म-किस्म की चीजें पैदा की हैं। उसने हवा, पानी, पेड़, पहाड़, रोशनी पैदा की है। उसने इतने सारे इन्सान पैदा किये हैं, लेकिन उनमें भी कितना फर्क है। मेरे दिमाग में कुछ सिफत है, आपके दिमाग में कुछ सिफत है। ये सभी सिफतें एक हो जायँ तो दुनिया में कितनी जीनत होगी! लेकिन हम आपसे लड़ते रहते हैं। भगवान ने लातादाद नियामतें दी हैं, जिनकी गिनती करते-करते हम थक जाते हैं। यह सब उन्होंने सुख के लिए दिया है। वे हमारे परमपिता हैं, जो हम सबपर प्यार करनेवाले हैं। क्या कोई भी बाप अपने बेटे के लिए यह चाहेगा कि मेरा बेटा दुःखी हो? वह तो यही चाहता है कि मेरा बेटा सुखी हो। जब कि खुदा का हम सबपर इतना प्यार है तो फिर हम दुःखी क्यों हैं? उन्होंने यह नहीं चाहा कि हम दुःखी हों, लेकिन हमने दुःखी होने का ठान लिया है। भगवान ने गाय पैदा की, जो दूध देती है और गोबर भी। लेकिन अगर हमने दूध से लीपना शुरू किया और गोबर खाने लगे तो अल्लामियाँ क्या करेगा? भगवान ने दुनिया हमारे सुख के लिए पैदा की, लेकिन हम उसका इस्तेमाल किस ढंग से करते हैं, इसीपर सारा निर्भर है। अगर ठीक ढंग से इस्तेमाल करें तो सुख ही हासिल होगा। हम तो भगवान से भी बढ़कर ताकतवर बने हैं। उससे भी ज्यादा चीजें हमने बनायी हैं। उसने सुख बनाया तो हमने उसका दुःख बनाया। उसने सुन्दर फल पैदा किये तो हमने उसकी शराब बनायी। इस तरह जो चीज फायदेमंद है, उसीमें से नुकसान पैदा करने की अक्ल हमने चलायी तो जिम्मेवार कौन है?

हमारा सुख सब के सुख से अलग नहीं

समझना चाहिए कि हम अपना सुख सबसे अलग है, यों सोचकर अपने ही सुख की कोशिश करते हैं, इसी लिए दुःखी होते हैं। अगर हमारे जिस्म में ही दुश्मनी शुरू हो जाय तो क्या होगा? आज मैं आठ मील चला हूँ तो नहाने के समय पाँव मलूँगा। अगर मेरा हाथ कहे कि 'मैं ऊँचा हूँ, पाँव नीचा है, उसे नहीं छूऊँगा' तो पाँव भी कहेगा कि 'फिर मैं' नहीं चलूँगा। इस तरह अगर हाथ पाँव की खिदमत करने से इन्कार करेगा तो मेरी कश्मीर-यात्रा यहीं खत्म हो जायगी। एक बच्चा रो रहा था, क्योंकि उसके कान में दर्द था। मैंने उससे कहा कि 'कान में दर्द है तो आँख क्यों रोती है? आँख में तो दर्द नहीं है।' लेकिन आँख और कान इतने अलग-अलग नहीं हैं कि वे एक-दूसरे के लिए बेपरवाह रहें। कान दर्द करता रहे तो भी आँख हँसती रहे, यह हो नहीं सकता। हाथ, कान, आँख, पाँव ये सारे ऐजा एक-दूसरे पर प्यार करती हैं, इसी लिए जिस्म चलता है। लेकिन कभी-कभी इस जिस्म में भी दुश्मनी पैदा होती है। मेरा पेट कमजोर है, लेकिन बर्फी मीठी लगती है, इसीलिए खा लेता हूँ। मूरख समझता नहीं कि जीभ को बर्फी मीठी मालूम होती है तो चबाकर थूँक देना चाहिए। बेचारे कमजोर पेट में बर्फी क्यों ठूँसनी चाहिए? लेकिन हम समझते नहीं, इसी लिए बीमारियाँ पैदा होती हैं और डॉक्टर पीछे लगे रहते हैं। इस तरह जब जिस्म में भी एक-दूसरे की दुश्मनी करने से हम दुःखी बनते हैं तो समाज में दुश्मनी करने से दुःखी बनने-वाले हैं ही।

गाँव का एक कुनबा बनायें

सारांश, हम सुख की कोशिश करते हैं, लेकिन दुःख पाते हैं। उसका सबब यही है कि हम अपना सुख अलग समझते हैं। जब हम समझेंगे कि हम सुखी होंगे तो सब सुखी होंगे और हम दुःखी होंगे तो सब दुःखी होंगे, तभी हम सब सुखी होंगे। मैं अपने सुख की कोशिश करता हूँ और आप अपने सुख की कोशिश तो दोनों दुःखी बन जाते हैं। इसलिए हमने एक सीधी-सी बात लोगों के सामने रखी है कि खुदा ने जो नियामतें दी हैं, सबके लिए हैं। उन नियामतों का मजा हम सबको मिलकर चखना चाहिए, अकेले नहीं। इन्सान को यही तजुरबा होता है कि हम अपने सुख में दूसरों को शरीक करते हैं तो सुख बढ़ता है, घटता नहीं। मीठे आम दोस्तों के साथ खायें तो आम का जायका बढ़ता है। यही इन्सानियत है। इसलिए हम एक-दूसरे की परवाह करेंगे तो सबका सुख बढ़ेगा। भगवान ने हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी सबके लिए पैदा की है। इसलिए जमीन की मालकियत मिटाकर, जमीन सबकी बनाकर गाँव का एक कुनबा बनाइये।

'मेरा सुख' नहीं, 'हमारा सुख'

यही सीधी-सी बात समझाते हुए हम आठ साल से घूम रहे हैं। यही समझाने के लिए इस सूबे में भी आये हैं। मैं चाहता हूँ कि सुख का यह राज आप समझ लीजिये। 'मेरा सुख, मेरा सुख' कहेंगे तो सुखी न होंगे। इसलिए 'हमारा सुख' कहिये। वैसे हमारी तहजीब ही ऐसी है कि बोलने में तो 'हम' यह सभी बोलते हैं। अपने लड़के को तारीफ के लिए पेश करते हैं तो कहते हैं 'आपका बेटा'। अपने घरके बारे में कहते हैं: 'आपका घर'। इस तरह बोलने में ही इतना सुख होता है तो करने से कितना होगा, इसका तजुरबा करें। समझना चाहिए जिस घरमें हम रहते हैं, वह हमारा नहीं है। उस घरमें चीटियाँ, चूहे और मक्खियाँ भी रहती हैं, जो समझती हैं कि इस घर पर हमारा

भी हक है। इसलिए हम अपना दिल जरा वसी बनायें और सबके लिए उसमें गुंजाइश रखें तो फिर सबके दिल में हमारे लिए गुंजाइश होगी। यही सुख का राज है।

दो हाथों से दोगे तो हजारों से पाओगे

तुम दोगे तो अपने दो ही हाथों से दोगे, लेकिन पाओगे तो हजार हाथों से पाओगे। जो सबकी खिदमत करता है, उसकी फिक्र सब लोग करते हैं। मैं अपने छोटे से दिमाग से सबकी फिक्र करता हूँ तो सब लोग अपने सभी दिमागों से मेरी फिक्र करते हैं। इसलिए यह मुनाफे का सौदा है। एक बेवकूफ, लालची शख्स था। उसने कहा कि मैं अपने घर की हवा बाहर नहीं जाने दूँगा। उसने अपने घरके दरवाजे बंद किये। नतीजा यह हुआ कि बाहर की खुली हवा का अन्दर आना बन्द हुआ। तो उसने पाया या खोया? इसलिए समझना चाहिए कि जो 'मेरा-मेरा' कहेगा वह खोयेगा। इसलिए जमीन सबकी बना दो और मालकियत गाँव की बना दो। मालिक तो वही एक हो सकता है। जो कहते हैं कि हम जमीन के मालिक हैं, वे कुफ्र करते हैं, क्योंकि वे मालिक की जगह लेना चाहते हैं। आप मालिक नहीं बन सकते। इसलिए मालिक को उसकी अपनी जगह पर रखिये और आप सब खिदमतगार बनिये।

जमीन सबकी बना दें

हम यह सीधी-सी बात समझाते हुए घूम रहे हैं कि जमीन की मालकियत मिटा दीजिये, गाँव का स्वराज्य बनाइये, गाँव में दस्तकारियाँ शुरू कीजिये, गाँव की मुश्तरका दूकान, गाँव का स्कूल चलाइये। गाँव की योजना हम ही बनायें, सरकार नहीं। क्या भगवान ने सरकार को ही अक्ल दी है, हमें नहीं? सरकार गाँव को मदद जरूर दे, क्योंकि वह हमसे टैक्स लेती है। लेकिन गाँव में सरकार का दखल नहीं होना चाहिए। बिना दखल के मदद मिलनी चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि गाँव के सभी लोग मिलकर गाँव का इन्तजाम करें। वह इन्तजाम किसीपर लादा नहीं जाय, बल्कि सबकी रजामंदी से हो। इसके लिए यह निहायत जरूरी है कि गाँव की सबसे बड़ी चीज जमीन सबकी बन जाय। तभी गाँव में स्वराज्य आयेगा। मैं चाहता हूँ कि आप इसपर गौर करें और जँचे तो अमल करें। मुझे यकीन है कि यह चीज आपको जँचे बिना न रहेगी, क्योंकि यह सही है।

◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

रजौरी (कश्मीर) २३-६-'५९

भेदों की सारी दीवारें गिरा दें

गरीबों की खिदमत में हम आठ साल से सारे हिन्दुस्तान में पैदल घूम रहे हैं। हमारी बहुत दिनों की तमन्ना थी कि जम्मू-कश्मीर में रहनेवाले अपने भाई-बहनों के दर्शन के लिए कभी न कभी पहुँचें। गत वर्ष पंढरपुर में सर्वोदय के सालाना जलसे में ही हमने जाहिर किया था कि हम सीधे कश्मीर जाकर वहाँ के भाई-बहनों से मिलना चाहते हैं। लेकिन बीच में एक साल बीत गया और महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और पंजाब —ये सूबे लाँघकर हम यहाँ पहुँचे हैं। करीब एक महीना हुआ, हम जम्मू के इलाके में घूम रहे हैं। अब हम ऐसी जगह पहुँचे हैं, जहाँसे कश्मीर शुरू होता है, ऐसा हम मान सकते हैं। वैसे कश्मीर की घाटी तो पीर पंजाल लाँघकर आयेगी, लेकिन इस इलाके को 'अतराफे कश्मीर' कह सकते हैं।

जो कुछ करना है, वही करेगा

हम यहाँ क्या करने आये हैं? हमारे दिल की बात पूछो तो पता चलेगा कि हमारे दिल में कहीं भी, किसी गोशे में यह बात नहीं है कि हम कुछ करेंगे। हमें लगता है कि करनेवाला वही है, जो हम सबका मालिक है, जो सबको रोशनी देता है। सबको उसीने जगाया है और सबको वही सुलानेवाला है। इसलिए जो कुछ करना है, वही करेगा। लेकिन अगर वह बनाना चाहे तो हम उसके हाथ के औजार बन सकते हैं। इसलिए हमारे मन में ऐसी कोई चीज नहीं है कि हम कुछ करनेवाले हैं, हम दुनिया में इन्किलाब लानेवाले हैं।

हम सन्तों, नबियों की सीख भूल गये

हम चाहते हैं कि इन्सान-इन्सान में तरह-तरह के भेदों की जो दीवारें बनी हुई हैं, वे सारी गिर जायँ। ये भेद कुदरत ने नहीं, बल्कि हमने ही बनाये हैं, यानी ये बनावटी हैं। तीन किस्म के भेद हमें ज्यादा तकलीफ देते हैं और इन दिनों उनमें एक और इजाफा हो गया है। पहले के तीन भेदों को मिटाने की हमारे लोगों ने खूब कोशिश की थी और उन्हें बहुत कामयाबी भी हासिल हुई। लेकिन इन दिनों जब से सियासत का भूत जाग गया है, तब से लोग एक-दूसरे पर प्यार करना, हमदर्दी रखना, एक ही कुनबे जैसे रहकर जिंदगी बसर करना, दूसरों के दुःख से दुःखी होना वगैरह बातें—जो वलियों ने, नबियों ने, संतों ने हमें सिखायी थीं—भूल गये। अब सियासत का वह जोर कुछ ढीला पड़ रहा है। हम उम्मीद करते हैं और हमें यकीन है कि वह मिटकर रहेगा।

अल्ला पचास नहीं हो सकते

इन तीन भेदों में पहला भेद है, मजहब का। चाहे आप उसे अल्ला, ईश्वर, गॉड—जो भी नाम दें, है वह एक ही। पचास अल्ला हो नहीं सकते। चाहे उसकी अलामत (पहचान) के तौर पर इन्सान अलग-अलग निशानियाँ भी कर ले, लेकिन दुनिया को पैदा करनेवाले दो नहीं, एक ही हो सकता है। हिन्दुस्तान में ऐसा कोई शख्स नहीं है, जिसके दिमाग में यह गफलत हो कि दुनिया को पैदा करनेवाले पंद्रह भगवान हैं। चाहे उसके अनेक नाम लिये जायँ तो भी वे सारे एक ही परमात्मा के नाम हैं, इसे सभी जानते हैं। परमेश्वर की सिफतें लातादाद हैं, इसलिए उसकी इबादत के तरीके भी अनेक हो सकते हैं। इबादत का एक ही तरीका होना चाहिए, यह आग्रह हम नहीं रख सकते। वह तो जिद ही होगी। कोई रहम, दया, नरमी चाहता है और वह अल्ला को रहीम कहकर उसकी इबादत करता है, तो अल्ला से उसे नरमी मिलती है। कोई देखता है कि मेरे दिल में झूठ-फरेब है और इसे धोना चाहिए तो वह परमात्मा को 'अलहक' (सत्य) नाम देकर सत्य की इबादत करता है। इसी तरह हर कोई अपने-अपने दिल का मैल धोने के लिए जिस किस्म के परमात्मा की जरूरत हो उसकी इबादत करता है।

अलग-अलग मजहबों के मानी क्या ?

अलग-अलग मजहबों के मानी है, परमात्मा के पास पहुँचने के अलग-अलग रास्ते। एक मामूली शहर में पहुँचने के कई रास्ते होते हैं। अंग्रेजी में कहावत है : All roads lead to Rome. हिन्दुस्तान के कई शहरों में एक 'देहली दरवाजा' होता है–क्योंकि देहली एक बड़ा मरकज है–जहाँ से देहली की तरफ रास्ता जाता है। इस तरह मामूली शहर में पहुँचने के लिए पचासों रास्ते हो सकते हैं, तो परमात्मा के पास पहुँचनेके लिए, जो अजीम हस्ती है, एक ही राह क्यों होनी चाहिए ? अगर यह ध्यान में आ जाय कि अलग-अलग मजहब याने इबादत के अलग-अलग तरीके हैं तो मजहब के झगड़े मिट जायँगे और मिटने ही चाहिए। आज हम परमात्मा की मर्जी के खिलाफ काम कर रहे हैं। समझना होगा कि मजहब दुनिया के तोड़ने के लिए नहीं, बल्कि जोड़ने के लिए आये हैं। इसलिए हमें मजहब के भेद मिटा देने चाहिए।

एक ही मजहब में अनेक पंथ, जातियाँ और पद चलते हैं। ऊँच-नीचवाले इस मामले ने हमारे देश को तंग कर दिया है। इसलिए हम इसे बिलकुल खत्म करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि यह चीज नेस्त-नाबूद हो जाय। इसे हम समाज-सुधार या समाज में बराबरी लाना कह सकते हैं।

विषमता उँगलियों-सी रहे

इक्तसादी या माली हालत अलग-अलग होती है, लेकिन वह पाँच उँगलियों जैसी होनी चाहिए। उँगलियों में कुछ थोड़ा फर्क होता है, लेकिन इतना फर्क नहीं होता कि एक उँगली एक इंच लम्बी तो दूसरी एक फूट लम्बी हो। अगर उँगलियों में इतना फर्क होता तो वे एक लोटा भी न उठा सकतीं। अगर उन्हें काट-छाँटकर बिलकुल बराबर कर दिया जाय तो भी काम नहीं चलेगा। इसी तरह समाज में थोड़ा बहुत अन्तर तो ठीक ही है, लेकिन बहुत ज्यादा तफरका गलत है। हर उँगली में अपनी-अपनी सिफत है और सब उँगलियों में मिल-जुलकर काम करने का माद्दा है। समाज भी ठीक ऐसा ही बनना चाहिए। मालिक, मुजारे, बेजमीन, यह भेद मिट जाना चाहिए। मालिक तो वह एक ही हो सकता है, दूसरा नहीं। मुसलमान उसे मालिक कहते हैं तो हिन्दू ईश्वर। जमीन यहाँ कायम रहती है और हम मर जाते हैं। यह नहीं हो सकता कि मरनेवाला मालिक हो और कायम रहनेवाली चीज उसकी जायदाद बने। हम मिट्टी से पैदा होते हैं और मिट्टी में ही मिल जाते हैं। इसलिए हम तो मिट्टी के खिदमतगार ही हो सकते हैं।

जमीन की मालकियत शैतानियत ही

खुशी की बात है कि यहाँ बावजूद इसके कि हुकूमत ने बाईस एकड़ का सीलिंग बनाया है, लोगों का दिल खुल रहा है। वे दान दे रहे हैं। लोग सही चीज को समझते हैं, समझानेवाला चाहिए। जो सही बात होती है, वह दिलकश होती है। वह अपने ही जोर से पैठती है। सूरज उगता है तो हमारी आँखें खुल जाती हैं और रोशनी आँखों में चली जाती है। सचाई खुद ही काम करती है। यह सचाई है कि जमीन की मालकियत नहीं हो सकती। मैं तो सीधी जबान में कहता हूँ कि जमीन की मालकियत को शैतानियत मानता हूँ। हवा, पानी और सूरज की रोशनी जैसी जमीन भी सबके लिए है।

हमें मजहबी झगड़े मिटाने चाहिए। ऊँच-नीच का भेद, जाति-भेद और इक्तिसादी तफरका, मालिक-मजदूर का भेद मिटाना चाहिए। उसके साथ-साथ इन दिनों एक नया भेद 'पार्टीभेद' आया है, जिससे गाँव-गाँव में आग लग रही है। उसे भी बुझाना है।

पाठकों से निवेदन

कश्मीर में इस समय बाढ़ का प्रकोप चल रहा है। श्रीनगर आदि में भी स्थिति अच्छी नहीं है। डाक-तार में विलम्ब हो रहा है। इसलिए हमें विनोबाजी के प्रवचन नियमित समय पर नहीं मिल पा रहे हैं। इस कारण संभव है कि प्रवचनों के अभाव में हमें अगले दो-एक अंक बंद रखने पड़ें। —संपादक

मजहबी झगड़े गलत

मजहब के झगड़े गलत हैं। सबके इबादत के तरीकों का सबको फायदा मिलना चाहिए। आपको एक तजुरबा हुआ, दूसरे को दूसरा हुआ तो एक-दूसरे के तजुरबों का एक-दूसरे को फायदा मिलना चाहिए। कोई 'सा' बोलता है, कोई 'रे', कोई 'ग' तभी संगीत बनता है। अलग-अलग सुर हों, लेकिन उनका अच्छा मेल हो तो संगीत बनता है। हिन्दुस्तान में इबादत के कई तरीके इकट्ठा हुए हैं। सूफियों, वेदांतियों और भक्तों ने अलग-अलग तरीके इकट्ठा किये हैं। उन सबका फायदा हमें मिलना चाहिए।

हमें अल्ला का भरोसा

यही बात अलग-अलग ढंग से समझाते हुए हम आठ साल से घूम रहे हैं। इस बुढ़ापे में भी हमें कोई थकान महसूस नहीं होती। बल्कि दिन-ब-दिन हमारा जोश बढ़ता जा रहा है। हम जवान से जवानतर बनते जा रहे हैं, क्योंकि इस खयाल का जो जायका है, मिठास है, वह अन्दर से हमें ताकत पहुँचाती है। इसीलिए बारिश में, ठंढ में, धूप में घूमता ही रहता हूँ। अगर अल्ला ने चाहा तो अभी पीर पंजाल भी लांघकर जाऊँगा। आखिर इन्सान की एक हद होती है। इसलिए वह कहेगा कि मैं फलाना काम करूँगा तो वह जरूर नहीं होगा। लेकिन मुझे यकीन है कि अल्ला चाहता है कि इस शख्स से काम लूँ। इसलिए मैं बेखौफ घूमता हूँ। ◆◆◆

अनुक्रम

१. अपना सुख दूसरे के सुख से...
थानामंडी २५ जून '५९ पृष्ठ ५५७
२. भेदों की सारी दीवारें गिरा दें
रजौरी २३ जून '५९"५५९

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी